Vol 6 Issue 12 Sept. 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

ISSN: 2249-894X   IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)   VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

कामायनी का महाप्रेरक उद्येश्य

Renu Bala D/o Prem Kumar
Assistant Professor (Hindi)in DAV College Abohar , Village Mammu Khera ,
Dist&The Fazilka.

प्रस्तावना :—

साहित्य की प्रत्येक विधा उद्देश्य पूर्ण होती है। किसी भी रचना को लिखने के पीछे लेखक का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य ही रहता है। उद्देश्य जितना प्रभावशाली होगा, उसके द्वारा लखित रचना उतनी ही सार्थक, सटीक व सफल मानी जाती है।
जहां तक 'जयशंकर प्रसाद द्वारा कृत 'कामायानी' के उद्देश्य का प्रश्न है तो व साद जी को इसके उद्देश्य को पाठकों तक पहुँचने तक पूर्णतः सफलता प्राप्त हुई है।
'कामायानी' आधुनिक काल की महत्वपूर्ण एवं बहुचर्चित काव्य कृति है। प्रसाद जी ने कामायानी में भारत के अतीत तथा उसकी प्राचीन संस्कृति के अतिरिक्त जीवन के विविध स्वरूपों और उनकी विभिन्न स्थितियों का भी चित्रण किया है। जो किसी भी महाकाव्य में सहजता से उपलब्ध होते है। वस्तुतः किसी भी महाकाव्य का संदेश उसके महान चरित्रों, महान आदर्श अंतिम घटनाफल, परिस्थिति दार्शनिक तथ्य व युग चेतना से अभिव्यंजित होते है। महाकाव्य का संदेश उसके अंतिम अधिकार में सन्निहित होता है।

प्रसाद जी ने भी 'कामायानी' की रचना से पूर्व महाकाव्य के उपर्युक्त तथ्यों को संदेश के संदर्भ में दृष्टि में रखा। यही कारण है कि उन्होनें कामायानी के नायक मनु तथा नायिका श्रद्धा का स्वरूप वैज्ञानिक सम्मत प्रकृति तथा प्रवृति का चित्रण मनु और श्रद्धा के रूप मे करने का प्रयास किया हैं

कर्म का संदेश— प्रसाद जी ने कामायानी में श्रद्धा को महान् एवं उदात्त चरित्र के रूप में प्रतिष्ठित किया है। कामायानी के संदेश मुख्य रूप से श्रद्धा के माध्यम से ही उद्धाटित होता है। अर्थात् श्रद्धा की महत्वपूर्ण उक्तियाँ कर्म एवं महात्म्य 'कामायनी' में संदेश के रूप में प्रकट हुए है। देव सृष्टि के विध्वंस होने के उपरान्त मनु चिंता ग्रस्त, निरूपाय एवं एकांकी अवस्था में है। श्रद्धा मनु को इस रूप में देखकर जीवन के वास्तविक निर्माणात्मक पक्ष अथवा कर्म का संदेश देती है।

उदाहरण दृष्टव्य है:—

''हृदय में क्या है नहीं अधीर— लालसा जीवन की निःशेष?
क्र रहा वंचित कहीं न त्याग, तुम्हें मन में धर सुन्दर वेश''
''दुःख के डर से तुम अज्ञात जटिलताओं का कर अनुमान,
काम से झिझक रहे हो आज, भविष्यत से बन कर अनजान।''

मनु श्रद्धा की प्रेरणा एंव उसके सक्रिय सहयोग से ही जीवन की विडम्बनाओं से क्रमशः दूर होते हुए मानव जीवन के चारो अभीष्ट फलो धर्म, अर्थ, काव, मोक्ष को भी प्राप्त करते है।

आनन्द का संदेश— श्रद्धा को मनु का चिंतित एवं उदासीन रूप खटकता है। वह चाहती है कि मनु इस व्यथित अवस्था से मुक्त हो जाए। वह मनु को अतीत की स्मृति के आनन्द का संदेश देती है। उदाहरणः—

''एक तुम, यह विस्तृत भूखंड प्रकृति वैभव से भरा अमंद,
कर्म का भोग, भोग का कर्म, यही जड़ का चेतन—आनंद।''

इस प्रकार आनन्द सबंधी जो धारणा पहले 'एक घूंट' में सकेंत रूप में व्यक्त हुई थी वह 'कामायानी' में आकर पूर्ण व्यक्त विकसित हुई थी वह 'कामायानी में काव्य आनन्द मार्ग के विहनों संकटों एंव उलझनों के स्वरूप को समझाता हुआ अन्त में इच्छा, ज्ञान और क्रिया व समन्वय एंव समसवतापूर्ण जीवन द्वारा आनन्द को प्राप्त करने की योजना करता है।

श्रद्धा मनु को बतलाती है कि सुख तथा आनन्द की सत्ता ही वास्तविक है। दुःख तो सुख के प्रकाश हेतु जीवन में आता है। दुःख से

अलग सुख की कोई सत्ता नहीं है।

स्मरसता का सिद्धान्त–प्रसाद जी ने अनेक स्थानों पर शासक शोषित, नर–नारी, अधिकार–अधिकारी, एवं व्यक्ति समाज में सरमसता के अभाव में घोर संघर्ष और विद्रोह को अभिव्यक्ति करने का प्रयास किया है। प्रसाद जी ने मनु को जीवन द्वारा नर–नारी के सामरस्य को उद्घाटित किया है। जीवन की समरसता की भूल और अभाव के कारण उन्हें दुःख –सुख तथा अशान्ति का सामना करना पड़ा है। भटकाव की स्थिति मिली और उनकी देव सृष्टि का विनाश भी हो गया। यह समरसता के अभाव के कारण हुआ। उदाहरणतः

''तुम भूल गये पुरूषतत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की,
समरसता है सम्बन्ध बनी अधिकार और अधिकारी की।''

मनु श्रद्धा के समरस–पूर्ण, सत्व स्वरूप से परिचित रूप होने के उपरान्त समरसतामय जीवन की प्रशंसा करते है। और उसका जीवन होते हुए समरसता के संदेश एंव शिक्षा से स्वीकार करते है। उदाहरण स्वरूप,

''तुमने हसँ–हसँ मुझे सिखाया,
विश्व खेल है खेल चलो,
तुमने मिलकर मुझे बताया,
सबसे करते मेल चलो।''

प्रवृति का संदेश– श्रद्धा मनु को प्रवृति का संदेश भी देती है। वह उसे शक्ति संचय कर जीवन मं सफलता प्राप्त करने को प्रेरित करती है। जीवन के कार्य क्षेत्र की सफलता ही मानव चेतना की सफलता है। मानव जीवन का चरम उद्देश्य इसी चेतन तत्व का अधिकाधिक प्रसार एवं विस्तार करता है। उदाहरण दृष्टव्य हैः–

''और यह क्या तुम सुनते नहीं विधाता का मंगल वरदान–
'शक्तिशाली हो, विजयी बनो' विश्व में गूँज रहा जय–गान।''

मोक्ष प्राप्ति– भारतीय काव्य शास्त्र के अनुसार महाकाव्य का उद्देश्य चतुवर्गफल की प्राप्ति होती है। कामायनी मे अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, चारों फल की सिद्धि दिखाई देती है। परन्तु प्रमुखता 'मोक्ष' की है। कामायनी में मोक्ष प्राप्त का तात्पर्य स्वर्ग प्राप्ति अथवा निर्वाह नहीं अपितु जीवन के सुख–दुख, हर्ष, विषाद से निकालकर परम शान्ति, शिवत्व अथवा अखण्ड आनन्द में लीन करना है। इसे जीवमुक्ति की संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है।

इस प्रकार मनु द्वारा कैलाश पर पहुँचकर तीव्र–इच्छा लोक, कर्मलोक तथा ज्ञान लोक का दर्शन, अध्यात्मिक यात्रा का अंतिम लक्ष्य है। वहाँ त्रिपुरदाह के उपरान्त इच्छा क्रिया तथा ज्ञान का जो समन्वय हुआ है। वही मनु की मोक्ष दशा अभिव्यक्त करती है। यथाः–

''स्वप्न स्वास जागरण भस्म हो
इच्छा क्रिया ज्ञान मिल लय थे।''

मनु के लिए उस दिशा में पहुँचने पर सर्वस्व चेतन्य आनन्दमय तथा सुन्दर था। यथाः–

''समरस थे जड़ या चेतन सुन्दर साकार बना था,
चेतनता एक विलासती आनन्द अखण्ड घना था।''

अतः प्रसाद जी के अनुसार

''कामायनी की अन्तिम परिणिति समरसता एंव अखण्ड आनन्द की प्राप्ति ही मोक्ष है। जो कामायनी का फल है। इस प्रकार आनन्द लोक अर्थात व्यावहारिक मोक्ष की स्थिति में पहुँचना ही कामायनी का संदेश है''

डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार,

''मानव और प्रकृति की समरसता कवि के अन्तिम तीन सर्गो दर्शन, रहस्य तथा आनन्द में दिखाई देते है। श्रद्धा द्वारा कवि ने कर्म, ज्ञान और इच्छा का सामजंस्य दिखाकर अपने सिद्धान्त को व्यावहारिक तथा वैज्ञानिक बनाने का प्रयत्न किया है।''

इस प्रकार महाकाव्य के भीतर समरसता के सिद्धान्त का बार–बार अभ्यास देखकर यही प्रतीत होता है कि ग्रन्थ का प्रतिपादन करता है। ओर उसे ही बार–बार दोहराता है।

त्याग का संदेश– वस्तुतः प्रसाद जी ने श्रद्धा के माध्यम से समरसता एवं आनन्द के उदात्त स्वरूप का उद्घाटन किया है। वही वह उसे हिंसात्मक कर्मो से भी रोकते है। श्रद्धा समझती है कि भले ही प्राणी मात्र के सुख हेतु कार्य करना श्रेयस्कर है। व्यक्तिगत सुख के लिए दूसरों को कष्ट देना उचित नहीं। श्रद्धा 'बहुजन हिताय' बहुजन सुखाय' में विश्वास रखती है।

''औरों को हंसते देखो मनु, हंसो और सुख पाओ,
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सब को सुखी बनाओ।''

श्रद्धा जिस त्याग का संदेश सब को देती है वह जीवन में उसका पालन भी है। वह आजीवन त्याग करती रहती है। वह बलिदान से ही दूसरों का हित भी करती है।

सृष्टि निर्माण का संदेश– प्रलय के उपरान्त मनु का सहचर्य श्रद्धा के साथ हुआ। तब हर प्रकार की साधना भाव होने पर भी उसकी सृष्टि का निर्माण हुआ। और अंत में उन्हें श्रद्धा द्वारा ही सम्पूर्ण आनन्द की प्राप्ति होती है। श्रद्धा युक्त मनु के जीवन द्वारा मानवीय सृष्टि का निर्माण हुआ। अंत में आनन्द की प्राप्ति को देखकर यह निष्कर्ष निकलता है। कि श्रद्धाने ही मनु के जीवन में अनुराग, प्रयत्न, विश्वास, शान्ति, आशा का संचार कर सृष्टि का निर्माण करने का संदेश दिया है। इसके अतिरिक्त प्रसाद जीने यह भी बताने का प्रयास किया है कि मनु ने आशा का संचार, निराशा, अवसाद, चिन्ता का अन्त के लिए श्रद्धा ही आन्तरिक स्थिति उत्पन्न करती है। मनु ने सृष्टि के निर्माण की प्रबल इच्छा शक्ति, आनन्द प्राप्त करने की संकल्प शक्ति श्रद्धा के आन्तरिक ज्ञान से भी उत्पन्न हुई। जैसे–

''दया, माया, ममता लो आज, मधुरिमा लो, अगाध विश्वास,
हमारा हृदय–रत्न–निधि स्वच्छा तुम्हारे लिए खुला है पास।''

आगे श्रद्धा मनु को कहती है,

''बनो संसृति के मूल रहस्य, तुम्हीं से फेलेगी यह बेल,
विश्व–भर सौरभ से भर जाय सुमन के खेलो सुन्दर खेल।''

प्रेम कला का संदेश– श्रद्धा के माध्यम से प्रसाद जी ने बताया है कि विश्व मानव को प्रेम कला अर्थात मानव हृदय को कोमल एंव सरस भावनाओं की आवश्यकता है जो उनके हृदय को चिरतृप्त तथा हृदय को फिर से आनन्दित करे।

''वह लीला जिसकी विकास चली, वह मूल शक्ति श्री प्रेम कला,
उसका संदेश सुनाने को संसृति में आई वह अमला।''

कवि ने वर्तमान जीवन में पाई जाने वाली विषमताओ का समाधान बहुत ही सुन्दर रूप में प्रक्तुत किया है। उन्होनें इच्छा, ज्ञान, और क्रिया के समन्वित रूप को ही प्रमुखता प्रदान की है। इस लिए 'कामायानी' को आधुनिक युग की चेतना का संवाहक माना जाता है।

प्रसाद जी ने कामायानी में श्रद्धा के माध्यम से समरसता का संदेश दिया है। इस संदेश में व्यजंनात्मक कला की मात्रा बहुत अधिक है। अतः यह एक काल विशेष होते हुए भी सार्वकालिक है। इसमें मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एंव ऐतिहासिक समग्र तत्व का संस्पर्श है। इसमें युग चेतना के धरातल पर मानवतावाद की प्रभाव पूर्ण अभिव्यक्ति है।

संदर्भ

लेखक		*पुस्तक*
1. अशोक कुमार गुप्त	–	कामायानी की रचना प्रक्रिया पृष्ठ संख्या – 32, 33 प्रकाशन – पुस्तक प्रचार शिवाजी 566/1 शिवाजी गली, गांधीनगर, दिल्ली–31 प्रथम संस्करण 1676
2. डॉ. कृष्ण देव शर्मा	–	कामायानी एक विवेचन पृष्ठ संख्या –80, 81, 82, 83, 85, 87, 89 प्रकाशन कला–मन्दिर 1687, नई सडंक दिल्ली 110005
3. डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना	–	कामायानी मे काव्य, संस्कृति और दर्शन पृष्ठ संख्या – 84, 107, 110 प्रकाशक – विनोद पुस्तक मन्दिर कार्यालय रागेय राघव,मार्ग, आगरा–2
4. गजानन माधव मुक्तिबोध	–	कामायानी एक पुनर्विचार पृष्ठ संख्या – 55, 57, 83 प्रकाशन – राजकमल प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड 8, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली 110002

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com